प्रश्नः

''कलीसिया' शब्द का ज़्या अर्थ है?''

उज़रः

परमेश्वर द्वारा आकाश और पृथ्वी की रचना किए जाने के समय स्वर्गदूत वहीं थे: ''भोर के तारे एक संग आनन्द से गाते थे और परमेश्वर के सब पुत्र जय जयकार करते थे?'' (अय्यूब 38:7)। सृष्टि की रचना से भी पहले, मैं हूं जो हूं (निर्गमन 3:14) ने अपने लोगों के लिए एक योजना बना ली थी। अपनी असीम बुद्धि और प्रेम से उसने एक *एकलेसिया* अर्थात बुलाए हुए लोगों को यीशु के लहू के द्वारा बनाने की योजना बनाई थी जिन्हें प्राय: कलीसिया कहा जाता है (इफिसियों 1:7-9; 3:21; 1 पतरस 1:18-21)।

उस कलीसिया अर्थात चर्च में, असंख्य स्वर्गदूतों की स्तुति करने वाली आंखों के सामने, परमेश्वर की बुद्धि दिखाई गई थी (इफिसियों 3:10, 11)। अपनी *एकलेसिया* अर्थात कलीसिया (या चर्च) को बनाने की यीशु की प्रतिज्ञा से बहुत पहले, स्वर्गदूतों को पता था कि कुछ अद्‌भुत होने वाला है, और वे इसे देखने के लिए उत्सुक थे (यू.: *parakupto*[1]; 1 पतरस 1:12)।

ईश्वरीय उद्देश्य न तो स्वर्गदूतों पर और न मनुष्यों पर पूरी तरह से प्रकट किया गया था। यह एक रहस्य ही था (इफिसियों 3:3, 4)। किसी आंख ने इसे देखा नहीं था, किसी कान ने इसे सुना नहीं था, और न ही किसी के मन में कलीसिया में मिलने वाली अच्छी वस्तुओं का कभी विचार आया था (यशायाह 64:4; 1 कुरिन्थियों 2:9, 10)।

नबी बड़ी गंभीरता से उन बातों के अर्थ ढूंढ़ते थे जो उन्होंने स्वयं लिखी थीं (मज़ी 13:17; 1 पतरस 1:10)। अंततः, परमेश्वर के चुने हुए वर्ष, महीने, दिन और घंटे के अनुसार वह समय आ ही गया। अंत में, परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान कलीसिया के द्वारा स्वर्गीय स्थानों में प्रधानों और अधिकारियों पर प्रकट कर दिया गया (गलातियों 4:4; इफिसियों 3:10, 11; प्रकाशितवाज़्य 9:15)।

सारे संसार से बुलाए हुए लोग

समाचार पत्र के रिपोर्टरों और दूसरे लोगों के विचार से, ''मसीह की कलीसिया'' या ''चर्च ऑफ क्राइस्ट'' भी एक साज़्प्रदायिक कलीसिया ही है। इसके अलावा, कलीसिया के कुछ सदस्य ''चर्च ऑफ़ क्राइस्ट के प्रचारक,'' ''चर्च ऑफ़ क्राइस्ट की मण्डलियां,'' और यहां तक कि ''मैं चर्च ऑफ़ क्राइस्ट का सदस्य हूं'' जैसी साज़्प्रदायिक कलीसिया की भाषा का इस्तेमाल करते हैं।

एल्विन लौरी नामक एक मसीही श्रमिक, जब फ्रेंकफर्ट, जर्मनी में रहता था, तो उसने मसीह की कलीसिया को ढूंढ़ने के लिए स्थानीय टेलीफोन डायरेज़्ट्री देखी। जर्मन भाषा में इसे *kirche Christi* होना चाहिए था; परन्तु यह नाम डायरेज़्ट्री में नहीं मिला। उसे वहां पर *Gemeinde Christi* मिला जिसका अर्थ है ''मसीह का समुदाय।''

जर्मन भाषा के शज़्द *gemeinde* को देखकर यीशु के शज़्द *एकलेसिया* का ध्यान आता है जिसका अनुवाद अंग्रेज़ी में ''चर्च'' किया गया है, परन्तु इसका अर्थ ''बुलाए हुए'' लोग है। इस शज़्द में सब लोगों को आशीष देने के लिए पिता के प्रेम की योजना का संदेश मिलता है यदि वे उसके बुलाए हुए अर्थात उसके द्वारा अलग किया हुआ समुदाय बन जाएं (मज़ी 16:18)। हिन्दी बाइबल का शज़्द कलीसिया भी, एकलेसिया से काफी मिलता जुलता है, जिसे मसीह में विश्वास करने वालों के लिए इस्तेमाल किया जाता है न कि ''ईंट पत्थरों से बने भवन'' के लिए।

जिस शज़्द का इस्तेमाल यीशु ने किया उसका उस समय अपने आप में कोई धार्मिक अर्थ नहीं था। यूनानी मिथक में ओरफियुस नामक किसी आदमी के बारे में बताया जाता है, जिसने अपने लिए *ekklesian* अर्थात जंगली पुशओं का एक झुंड बनाया, जो थ्रेसी पर्वतों पर उसकी बात सुनता था। लूका ने इफिसुस के रहने वालों की सभा अर्थात नगर का काम काज देखने वाली सभा को यह नाम दिया (प्रेरितों 19:39)।

लूका ने इस शज़्द का इस्तेमाल पौलुस के विरुद्ध चिल्ला-चिल्लाकर शोर मचाकर अपनी घृणा व्यज़्त करती उपद्रवी भीड़ के लिए भी किया (प्रेरितों 19:32, 41)। इसके अलावा उसने इस्राएल जाति के प्रतिज्ञा किए हुए देश में जाने के लिए मिसर से बाहर निकलने के रूप में वर्णन करने के लिए भी इसका इस्तेमाल किया (प्रेरितों 7:38)। लूका ने यीशु की तरह इस शज़्द का इस्तेमाल उन लोगों के समूह के बारे में बताने के लिए भी किया जिन्होंने यीशु की पुकार ''मेरे पास आओ'' को मानना था (मज़ी 11:28; 16:18; प्रेरितों 5:11; देखिए प्रेरितों 2:47; KJV)।

वेबस्टर की डिज़्शनरी के अनुसार अंग्रेजी की अधिकतर बाइबलों में *एकलेसिया* जिसका अर्थ ''सार्वजनिक आराधना के लिए पवित्र भवन'' है, का अनुवाद ''चर्च'' गलत है। इस परिभाषा के अनुसार, ''चर्च'' शज़्द का यीशु के शज़्द *एकलेसिया* से कोई सज़्बन्ध नहीं है।

इसके अलावा, यूनानी भाषा के नये नियम से अंग्रेज़ी के पहले अनुवाद (1525 में विलियम टिंडेल द्वारा तैयार किए गए) में *एकलेसिया* को ''चर्च'' के रूप में नहीं बल्कि ''मण्डली'' के रूप में दिखाया गया था। किंग जेज़्स वर्ज़न के 54 अनुवादकों के पास टिंडेल का अनुवाद पहले से ही

था, और उन्हें पता था कि यह सही अनुवाद है। तौभी, राजा जेम्स प्रथम, जो चर्च ऑफ़ इंग्लैंड का मुखिया था, ने उन्हें टिंडेल का अनुसरण करने से रोका। उसने आज्ञा दी कि *एकलेसिया* का अनुवाद ''मण्डली'' के रूप में नहीं बल्कि ''चर्च'' के रूप में किया जाए।[2]

इसका परिणाम यह हुआ कि अंग्रेज़ी बोलने वाले लोगों पर एक ऐसा शब्द थोप दिया गया जिसका इस्तेमाल परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त लेखकों ने नहीं किया था। अपने अनुवाद में अलेग्ज़ेन्डर कैज़्पबेल[3] ने टिंडेल का अनुसरण करके ठीक किया है, परन्तु किंग जेम्स वर्ज़न में पाया जाने वाला शब्द ''चर्च'' आज भी है।

अंग्रेज़ी बाइबलों में ''चर्च'' शब्द बहुत अच्छा अनुवाद तो नहीं है, परन्तु यदि लोग इसे ईंट-पत्थरों की इमारत न समझें तो यह अनुवाद पवित्र शास्त्र के विरुद्ध भी नहीं है। वास्तव में, प्रभु के बुलाए हुए लोग एक इमारत या भवन हैं, लेकिन वे ईंट-पत्थरों की इमारत नहीं हैं। मसीही लोग जीवित पत्थरों का एक आत्मिक घर बनते हैं (1 पतरस 2:5); वे परमेश्वर की रचना हैं (1 कुरिन्थियों 3:9)। पापियों को ''अंधकार में से उसकी अद्भुत ज्योति में बुलाया'' जाता है (1 पतरस 2:9ख)।

स्थानीय सभा

डुबकी अर्थात बपतिस्मे के समय से ही बुलाए हुए अर्थात मसीही लोगों की एक विश्वव्यापी देह में ही नहीं बल्कि इस संदर्भ में स्थानीय सभा के अर्थ में, एकलेसिया में इकट्ठे बुलाए गए हैं (1 कुरिन्थियों 11:18; 14:13)। स्थानीय सभा का वर्णन करने के लिए पवित्र आत्मा ने *एकलेसिया* के अलावा एक और शब्द *सुनागोग* का इस्तेमाल किया है, जिसका अर्थ ''एक मण्डली, एक सभा'' है (याकूब 2:2)।

प्रभु से प्रेम करने वाले लोग जानबूझकर कभी भी स्थानीय मण्डली से मिलना नहीं छोड़ते हैं (यू.: *episunagoge;* इब्रानियों 10:25)। इस तथ्य के बावजूद कि इकट्ठा होने की उपेक्षा न करने की ईश्वरीय आज्ञा है, वे आपस में मिलकर आनन्दित होते हैं। आम लोग एक दूसरे के साथ मित्रतापूर्वक रहते हैं। ''मित्रों के बढ़ाने से तो नाश होता है, परन्तु ऐसा मित्र होता है, जो भाई से भी अधिक मिला रहता है'' (नीतिवचन 18:24)। अलग रहने वाला व्यक्ति सामान्य नहीं होता: ''जो औरों से अलग हो जाता है, वह अपनी ही इच्छा पूरी करने के लिए ऐसा करता है'' (नीतिवचन 18:1)।

स्थानीय मण्डली में मसीही लोग, ''एक दूसरे को समझाते'' हैं; ''और ज्यों-ज्यों उस दिन को निकट आते देखते हैं त्यों-त्यों और भी'' अधिक ऐसा करते हैं (इब्रानियों 10:25)। किस दिन को निकट आता देखते हैं? न्याय के दिन को? यह तो इसका सम्भव उज़र नहीं होगा, क्योंकि ''उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता'' (मत्ती 24:36क); क्योंकि वह दिन तो चोर की नाईं आएगा (1 थिस्सलुनीकियों 5:4)।

तो फिर और कौन सा दिन है? 70 ईस्वी में यरूशलेम में विनाश का दिन? लोग देख सकते थे कि वह दिन आ रहा है, परन्तु उस दिन मसीही लोगों ने इकट्ठे नहीं होना था: ''तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएं'' (मत्ती 24:16)।

किस दिन ? प्रभु के दिन ? सप्ताह के पहले दिन ? मसीही लोग देख सकते थे और आज भी देख सकते हैं कि वह दिन आ रहा है। सोमवार से शनिवार तक उन्हें पता होता है कि वह दिन आ रहा है। पौलुस, जो जाने की जल्दी में था, सप्ताह के पहले दिन रोटी तोड़ने के लिए दूसरे मसीहियों के साथ इकट्ठे होने के लिए त्रोआस में ''सात दिन ठहरा'' (सोमवार से रविवार) था (प्रेरितों 20:6, 7; आयत 16 भी देखिए)। पुतियुली में भी वह सात दिन तक ठहरा था, संभवत: यहां भी वही कारण था जो त्रोआस में था (प्रेरितों 28:13, 14)।

101 ईस्वी में, इग्नेशियस ने लिखा था कि मसीही लोग ''सब्त को नहीं मानते थे बल्कि वे प्रभु के दिन को मानते थे, जिस दिन हमें उसके द्वारा जीवन मिला है।'' 150 ईस्वी में जस्टिन मार्टिन ने लिखा था कि मसीही लोग ''प्रभु भोज को अभी भी मनाते थे और प्रत्येक रविवार यह ईश्वरीय आराधना का एक आवश्यक भाग होता था।'' दूसरी शताब्दी के एक दस्तावेज़ *द डिडेक ऑफ़ द अपोस्टल्स* में कहा गया है कि ''प्रभु के प्रत्येक दिन [मसीही लोग] रोटी तोड़ने और धन्यवाद देने के लिए इकट्ठे होते थे।''

विश्वव्यापी सभा

पिता की योजना का चरम और अंतिम उद्देश्य एक विश्वव्यापी सभा अर्थात हर युग में सिद्ध किए हुए धर्मी लोगों की आत्माओं का आनन्दपूर्ण इकट्ठ था। वे असंख्य दूतों की संगति में, सब लोगों के एक दूसरे से गले मिलने की सभा अर्थात *paneguris* (इब्रानियों 12:23) में शामिल होंगे। परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया यह शब्द मिश्रित है जिसमें *pan* का अर्थ ''सारी'' और aguris का अर्थ ''सभा'' है।

इस्राएलियों के एक विशेष पर्व पर प्रभु ने आज्ञा दी थी कि ''तू आनन्द ही करना'' (व्यवस्थाविवरण 16:15)। यूनानी भाषा वाले पुराने नियम में ऐसे पर्व को *paneguris* कहा जाता है (यहेजकेल 46:11; होशे 2:11; 9:5)। यूनानियों में, *paneguris* ओलम्पिक खेलों के समय के जश्न को कहते थे। मसीही लोगों में *paneguris* हर युग के छुड़ाए हुए लोगों के साथ अर्थात स्वर्ग में और पृथ्वी पर परमेश्वर के सम्पूर्ण परिवार के साथ चाहे वह इन्सान हो या स्वर्गदूत, न खत्म होने वाला जश्न है (इफिसियों 3:15)।

कुछ अर्थों में, मसीही लोग पहले ही *paneguris* का अनुभव कर रहे हैं, क्योंकि इब्रानियों की पत्री के लेखक ने इब्रानियों 12:22 में वर्तमान पूर्णकाल का इस्तेमाल किया था। आज भी वे बेशक आंशिक रूप में परमेश्वर और उन सबसे जो परमेश्वर की ओर हैं, जीवित हों या मर गए, आत्मिक संगति में हैं।

परन्तु जब तक मसीही लोग इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ अनन्त राज्य में नहीं बैठ जाते, जब तक वे परमेश्वर का चेहरा और वह बड़ा श्वेत सिंहासन नहीं देख लेते तब तक विश्वव्यापी सभा अभी भी भविष्य में होने वाली बात है (मत्ती 8:11; प्रकाशितवाक्य 20:11; 22:4)।

सारांश

तो फिर ''चर्च'' अर्थात कलीसिया परमेश्वर के बुलाए हुए लोगों का समूह है। इसका अर्थ यह है कि इस समूह के सदस्य वे लोग हैं जिन्होंने पाप को छोड़ने और परमेश्वर की आज्ञाकारिता में रहने के लिए उसकी बात मानी है। वे उसकी आराधना करने के लिए निरन्तर इकट्ठे होते हैं, और समय के अंत में वे स्वर्ग में परमेश्वर की आज्ञा मानने वाले सभी अनुयायियों की सभा में शामिल होंगे।

पाद टिप्पणियां

[1]यूहन्ना 20:11 में इसी शब्द का इस्तेमाल किया गया है; मरियम ने ''कब्र की ओर झुककर'' देखा। [2]अलेग्ज़ेन्डर कैज़्पबेल, ''किंग जेज़्स' इंस्ट्रज़्शन्स,'' *द क्रिश्चियन बेपटिस्ट* अंक 2 (बुफेलो, Va.: लेखक द्वारा, 1827; रीप्रिंट, नैशविल्ले, गॉस्पल एडवोकेट कं., 1955), 78. [3]*द सेकरेड राइटिंग्स ऑफ द अपोस्टल्स एण्ड इवेंजलिस्ट्स ऑफ जीज़स क्राइस्ट, कॉमनली स्टाइल्ड द न्यू टैस्टामेंट (द लिविंग ओरेकल्स),* अनु. जॉर्ज कैज़्पबेल, जेज़्स मैकनाइट, और फिलिप्प डॉडरिज, अलेग्ज़ेन्डर कैज़्पबेल की भूमिकाओं, विभिन्न संशोधनों और एक परिशिष्ट के साथ (पृ. न., 1826; रीप्रिंट, नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं. 1954)।